Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

किन्नर और समाज नीरजा माधव की दृष्टी में

अनिल सोनाजी शिंदे
शोध छात्र
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद.

आलेख की शुरुआत से पहले पारुमदन नाईक द्वारा रचित इन पंक्तियों को प्रस्तुत करना चाहूँगा जो इन किन्नरों की घोर व्यथा को दिखाती हैं जो हर एक मन को झकझोर सकती हैं-

"कंगन हैं मेरे हाथ में,
पर कलाई में ताकत है पुरुषों से अधिक
आवाज़ है मेरी पुरुषों जैसी
पर मन मेरा कोमल है पुरुषों से अधिक
पर... पूछता है अस्तित्व मेरा...तू कौन है.. ?" (१)

यह चिरंतन सत्य है कि समय गतिमान है और समय की गति के साथ सृष्टि के प्राणियों का गहन रिश्ता रहता है । सांसारिक प्राणियों में मानव सबसे अधिक विवेकशील होने से वह समय के साथ अपनी कदमताल मिलाता हुआ विकास के नवीनतम आयामों को छूने के लिए हमेशा लालायित रहता है साथ ही उतना ही प्रयत्नशील भी | समय के साथ व्यक्ति की सोच, उसकी आवश्यकताएं अपेक्षाएं मान्यताएं तथा वर्जनाएं बदलती रहती है इसी बदलाव में सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व अन्य जीवनमूल्यों में भी परिवर्तन आता है |

मानवों के विचारों ने साहित्य को जन्म दिया तथा साहित्य ने मानव की विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की | उसे सभ्य बनाने का कार्य किया । इतिहास साक्षी है कि मानव समाज के सारे परिवर्तन साहित्य द्वारा ही हुए | भारतीय साहित्य भी संकुचित नहीं है, बल्कि पूरी मानवता का साहित्य है। यह सिर्फ एक देश का नहीं बल्कि पूरे विश्व का साहित्य है। यह बंधन का नहीं मुक्ति का साहित्य है, यह घृणा का नहीं आत्मीय प्रेम का साहित्य है । कोई भी विचार शब्दों के बंधन में नहीं रहता है, वह पीढ़ियों तक पहुचता है । भावी पीढ़ी विगत की श्रेष्ठताओं में अपना मार्ग बनाती है। साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, विकृतियों, अभावों, विषमताओं व असमानताओं आदि के बारे में लिखता है। इन सबके बारे में जनमानस को जागरूक करता है। साहित्य सदैव ही लोकहित के लिए रहता है । जब जब समाज में मूल्यों व आदर्शों का पतन तथा दुखियारों का दुःखों में वृद्धि हुई तब तब साहित्य ने जनमानस को अलग अलग तरीकों से जागरूक किया है और सही मार्ग पर चलने का साहस भी प्रदान किया ।

समाज साहित्य को प्रभावित करता है और साहित्य समाज को परिवर्तित | साहित्य और समाज का सम्बन्ध एक दूसरे पर निर्भर करता हुआ दिखाई देता है । एक साहित्यकार समाज का चेतन और जागरूक प्राणी होता है । साहित्य द्वारा समाज निर्मित भी होता है और परिवर्तित भी । जब भी

साहित्यकार समाज की अवांछनीयता या त्रुटियों को देखता है, उसे अनावश्यक समझता है, तब वह उनका शिरोच्छेदन कर आमूलचुल परिवर्तन के लिए दिशा निर्देश को ही अपना एकमात्र विकल्प मानता है । तब एक साहित्यकार का सृजन जन्म लेता है । इस तरह से एक साहित्यकार समाज रचना, समाज सुधार और समाज परिवर्तन में अपना ऋण अदा करता है |

जहाँ तक संभव हो सका साहित्यकारों ने समाज के सभी पहलूओं को छुआ फिर भी कुछ ऐसे विषय हैं जो प्राचीन साहित्यकारों के लिए अनछुए ही रहगए थे | उन्हीं अनछुए पहलूओं पर आजकल के लेखक अपनी कलम बड़ी रफ़्तार से चला रहे हैं । नारी विमर्श और पुरुष विमर्श के अतिरिक्त एनी सभी विमर्शों से हटकर एक और भी विमर्श है जिसकी तरफ कुछ समय पूर्व तक किसी का ध्यान नहीं गया । इस विमर्श का नाम है "किन्नर विमर्श" | जी... हाँ किन्नरों की जो दुःख भरी दास्ताँ है उस पर नीरजा माधव ने कुछ विशेष ध्यान देकर इस विषय को, किन्नरों के दुखों को एक विमर्श के साथ जोड़ दिया और अन्य साहित्यकारों ने भी इस विमर्श में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया | हम सभी तन से तो २१ विन सदी में प्रवेश कर चुके मगर मन से अभी पुरानी संकीर्ण मानसिकता मैं ही जी रहे हैं। किन्तु समाज के कुछ कठिन पहलुओं को जानने, समझने और महसूस करने के लिए हमें हमारी मानसिकता को भी आधुनिकता से जोड़ना पड़ेगा |

किन्नर जो सदियों से स्वयं को छोटा, हिन् और दुर्बल समझते आये हैं... जिन्हें हम समय समय पर अलग अलग नामों से पुकारते हैं जैसे...शिखंडी, हिजड़ा, खोजवा और किन्नर | लेकिन क्या कभी तथकथित सभ्य समाज ने यह सोचा हैं कि इन किन्नरों के हिस्से में आई असीम वेदना को ये कब तक झेलेंगे और समाज में अपनी इज्जत गंवाते रहेंगे । फिर भी देखा गया है कि विमर्श के नतीजे में भले ही सरकार ने किन्नरों को आरक्षण की सूची में शामिल किया हो किन्तु समाज अभी भी मूक बना है । अत्यंत अवसाद के साथ कहना पड़ रहा हैं कि समाज में इन किन्नरों की उपस्थिति केंद्र की जगह सदा ही परिधि पर ही बनी हुई है । जीवन भर मन मसोस कर रहने वाले इनकी समाज में उपस्थिति उपेक्षित ही रही हैं ।

हमें जानना हैं उन कारणों को जिनके चलते किन्नरों को पारिवारिक अनुष्ठानों में केवल आशीष देने का काम ही सौंपा गया है कोई अन्य काम क्यों नहीं...? क्यों इन्हें शिक्षा से वंचित रखा गया है..? क्यों इन्हें उच्च पद की नौकरी नहीं मिलती है..? क्यों हर समय इनका मखौल उड़ाया जाता है..? समाज में इनके जैसे जीवन की चाह कोई क्यों नहीं रखता...? क्या यह सचमुच अभिशाप है या इन किन्नरों के जन्मदाताओं के किसी पाप का फल..? इन सभी जटिल सवालों का जवाब एक ही रहेगा कि सभ्य समाज यह नहीं चाहता है कि जो ना नर है और ना ही नारी हैं वो क्यों भला उनके समकक्ष रहे ।

किन्तु समय के पहियों में सभी की पीड़ा और उस पीड़ा का उपाय भी छिपा रहता है। समय के इसी चक्र में आज नीरजा जी जैसे उच्चकोटि के साहित्यकारों के भगीरथी प्रयत्नों से इन किन्नरों को मतदान का अधिकार, चुनाव में खड़े होने का अधिकार, आरक्षण और भी कई ऐसी बातें हुई जो इन्हें ख़ुशी प्रदान कर सके |

हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श की शुरुआत नीरजा माधव के उपन्यास यमदीप" से हुई | नीरजा की दृष्टी में जिस तरह से समाज में स्त्री पुरुष समभाव स्थापित हो रहा है उसी तरह जो ये किन्नर हैं, (जो प्राकृतिक रूप से या माता पिता की किसी शारीरिक कमी से किन्नर बने हैं) तो फिर इनके लिए यह सामाजिक भेदभाव क्यों...? वैसे तो इस विमर्श में बहुत से साहित्यकारों ने अपनी आवाज़ तेज धार की कलम से उठाई है... जैसे निर्मला भुराडिया के उपन्यास गुलाम मंडी में लेखिका ने अपने अनुभवों को इस उपन्यास के माध्यम से इनकी व्यथा को व्यक्त किया है "प्रोजेक्ट आधारित उपन्यास से एकदम अलग यह उपन्यास रचनाकार के मूल सारोकारों से सीधा जुड़ा हुआ है।

जो पूरी संजीदगी से एक इंसान को इनसान मानने की वकालात कर रहा है... फिर वह चाहे मजदूर स्त्री हो या समाज का तिरस्कार झेलने वाला मजबूर किन्नर.. |(२) यह सब पढ़ कर हम सब आवाक रह जाते हैं कि मानव जाति के इस वर्ग की पीडाएं तद्जनित नहीं अपितु किसी क्रूर परिहास का ही परिणाम प्रतीत होती है । नीरजा माधव के मानस मन में भी निरंतर यही विचार चलते रहते हैं कि इन किन्नरों की असहनीय पीड़ा व वेदना की दुःख भरी आंच समाज तक कैसे पंहुचे... ? वे लिखती है.. "बचपन से देखती आई हूँ कि इन लोगों के प्रति समाज में हो रहे निरंतर तिरस्कार को जिन्हें प्रकृति ने तयशुदा जेंडर नहीं दिया इसमें इनका क्या दोष..? फिर ये क्यों हमेशा त्यागे गए, सताए गए और अपमान का भागी बने..? इन्हें ही क्यों अपमानजनक शब्दों से व्याख्यित किया गया.. ? आखिर क्यों नहीं ये मानवीय गरिमा के हक़दार बन सके..? (३) इनके ये मार्मिक विचार सचमुच हम पाठकों को सुन्न कर देते हैं | किन्नरों को समाज में यथोचित बाइज्जत वाला स्थान दिलाने की चाह रखने वाले एक विद्वान के मत से एक किन्नर की दर्द भरी वाणी में मर्द रहूँ औरत रहूँ या फिर हिजड़ा बन जाऊं इसमें किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता पेट की आग तो बड़ों-बड़ों को भी न जाने क्या क्या बना देती है.. । (४)

समाज में इस स्थिति को देखते हुए तो मन एक बड़े विषाद से भर जाता है कि किस तरह से जन्म देने वाले माता पिता बड़ी निर्दयता से जननांगों से विकलांग अपने ही पुत्रों को घर परिवार से अलग कर अभिशप्त जीवन जीने के लिए किन्नरों को इस तरह सौंप देते हैं जैसे यही उन बच्चों की नियति हो | सामाजिक, राजनितिक व आर्थिक स्तर पर ना जाने इन्हें कितने रूपों में शोषित होना पड़ता है । समाज ने इन्हें इस कदर मुख्य धारा से काटकर अलग कर दिया है जैसे इन्होने बहुत ही बड़ा अपराध किया हो । अवसाद के साथ कहना पड़ रहा है कि इसी कारण से ये किन्नर आत्मसम्मान की तलाश और अपने मानवीय वजूद के लिए निरंतर संघर्षरत हैं । लेखिका नीरजा माधव ने यमदीप उपन्यास में ख़ास प्रसंग के बारे में लिखते हुए कहा है मुख्य पात्र नानाद्रानी के माता- पिता उसे पास रख कर पढ़ाना चाहते हैं परन्तु महताब गुरु उसके माता-पिता को समझाते हुए कहते हैं कि माताजी आज तक आपने किसी स्कूल में हिजड़ों को पढ़ते हुए देखा है...? किसी ओहदे वाली कुर्सी पर बैठा हुआ देखा है..? पुलिस, मास्टर या कलेक्टर की... अरे इनकी दुनिया यही है माताजी "(५) नंदरानी से नाज्यियी बनी किन्नर और उसके साथियों ने एक पागल औरत का प्रसव करवाया और उस नवजात शिशु की माँ

मर जाने पर उस नवजात शिशु को भी समाज ने नहीं अपनाया | फिर उन किन्नरों ने उस शिशु की देखभाल की तो समाज ने इस पर भी आपत्ति जताई तब दिल दहलाने वाले इस संवेदनशुन्य प्रसंग से प्रभावित कुछ हिजड़े इस निर्दयता को ललकारते हुए कहते हैं- "अरे! हम हिजड़े हैं... हिजड़े इंसान हैं क्या जो मुहं फेर ले" (६) समाज ने भले ही हिजड़ों को प्रेम और ममता से वंचित रखा किन्तु किन्नरों ने किस तरह से उस शिशु के लिए सामाजिक और पारिवारिक भूमिका बड़े प्यार से निभाई इस बात को लेखिका ने केंद्र में रख कर समाज को इशारा किया है कि परिवार या समाज के प्यार के बिना ही इनमें कितने उच्च संस्कार हैं जो एक नवजात शिशु को बड़े जातां से पाल रहे हैं । लेखिका के शब्दों में—" उत्पादन और उपयोगिता की राजनीती का प्रश्न इस उपन्यास का केंद्र बिंदु है जहाँ जैविक भिन्नता समाज में इनके अस्तित्व को अस्वीकार्य बना देती है | (७)

नीरजा माधव के द्वारा आरम्भ किये गए इस महान कार्य को आगे और भी सफलता के परचम फहराने के लिए हम सभी को सदैव ही प्रयत्नशील रहना है। ताकि इन किन्नरों को कभी अपनी अधूरी देह के लिए समाज से अपमान और तिरस्कार की असीम पीड़ा न झेलनी पड़े । वर्तमान समय में आज किन्नरों का दुःख दूर करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति का ठीक इसी तरह कर्तव्य बन जाना चाहिए जैसे हम एम्बुलेंस की आवाज़ सुनते ही सबसे पहले उसे जाने के लिए मार्ग देदेते हैं । साहित्यकारों द्वारा की गई इस पहल को हम एक सार्थक स्वरुप देवे यही प्रयत्न हम सब के द्वारा होते रहे । इस महान कार्य का बीड़ा हम सब उठाए और एक शपथ भी ले कि जहाँ कही किन्नरों से हमारा सामना हो तत्परता से उनकी पीड़ा दूर करने का भरसक प्रयत्न करे | हम और हमारा सभ्य समाज जो पुरातन पंथी की मानसिकता होते हुए भी घमंड करते हैं और इस बात का ढिंढोरा पिटते हैं कि हम २१ वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं और नए जमाने के नए विचारों को स्वीकार कर चुके हैं फिर किन्नरों के विषय में क्यों पिछले विचारों की मानसिकता बना लेते हैं...? इस विषय पर उपन्यास के एक पात्र के शब्द हमारे मन को झकझोरते हैं " जिस जिंदगी का हिस्सा अचानक मुझे बना दिया गया वह इतना आकस्मिक और अविश्वसनीय था कि मेरा किशोर मन उसे किसी भी रूप में पचा पाने में असमर्थ था | मनुष्य के डॉन ही रूप मैंने आज तक देखे थे इस तीसरे रूप से मैं परिचित तो था पर उसे मई पहले रूप का ही एक हिस्सा मानता था |" (८)

और अंत में-

किन्नर वर्ग के दुखों को दूर करने के लिए हमें निरंतर रूप से प्रयत्नशील रहना है, क्योंकि उन्हें दुःख दोहरे रूप में जो मिले हैं एक प्रकृति ने दिए और दूसरा समाज ने । इनको समाज की मुख्य धरा से जोड़ने का कार्य अभी बाकी है | इस कार्य को जितने भी साहित्यकार अपने अथक प्रयत्नों से कर रहे हैं उन्हें सफलता के द्वार तक लाने में हम सब का तिनके तिनके का सहयोग तो बनता ही है । इस वर्ग को मानवीय गरिमा प्रदान करने के लिए सरकार और साहित्यकारों द्वारा जो कदम उठाए गए हैं वो निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होते रहे इस्प्रककार हम सबका सहयोग भी अपेक्षित है । ऐसा करके

ही हम सभी साहित्यकारों की लेखनी का और उठाए गए सरकार के सार्थक कदमो का सम्मान कर सकेंगे ।

सन्दर्भ सूची

१) मैं क्यों नहीं - पारूमदन नाईक-पेज नंबर - १६५
२) गुलाम मंडी - निर्मला भुराडिया
३) गुलाम मंडी - निर्मला भुराडिया
४) तीसरी ताली- प्रदीप सौरभ
५) यमदीप- नीरजा माधव सामयिक प्रकाशन
६) यमदीप- नीरजा माधव सामयिक प्रकाशन
७) हिंदी उपन्यास और थर्ड जेंडर हिंदी कहानियां कहानी संग्रह
८) नाला सोपारा पोस्ट बॉक्स नंबर २०३ - चित्रा मुदगल